मरूमेघ
किसान ई पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाईन उपलब्ध

ISSN : 2456-2904
© marumegh 2022
आलेख प्राप्ति : 21-01-2022
स्वीकरण : 31-01-2022

गेलार्डिया की उन्नत खेती

पुष्पा कुमावत[1], शैलेन्द्र कुमार[2] एवं डॉ. निधि[3]
1 एवं 3 कृषि विज्ञान केन्द्र, अठियासन, नागौर
2 मरू क्षेत्रीय परिसर–केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर
ई मेलः kwt1995harsh@gmail.com

परिचय : प्राचीन काल से ही फूलों का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रहा है एवं फूल सभी सजावट और भेंट के उदेश्य से उपयोग लिए जाते हैं। गैलार्डिया की लगभग 30 प्रजातियां पायी जाती हैं, जिनमें से गैलार्डिया पल्चेला, गैलार्डिया अरिस्टाटा और गैलार्डिया × ग्रांडीफ्लोरा बारहमासी और वार्षिक होने वाली प्रमुख बागवानी प्रजातियां हैं। गैलार्डिया के फूल खिले फूल, कटे हुए फूल, सजावटी गमलों आदि के रूप उपयोग किये जाते है। इसकी खेती मुख्यतः राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश में की जाती हैं। यदि किसान अन्य फसलों के साथ–साथ गैलार्डिया की खेती करे तो वर्ष भर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

भारत में फूलों की खेती की बहुत ज्यादा संभावनाएं हैं। ऐसे में किसान भाई अगर अन्य फसलों के साथ–साथ फूलों की खेती करे तो वर्ष भर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। उत्तरी भारत में गेंदा, गुलदाउदी, गुलाब, जैसमीन तथा गैलार्डिया की सफलतापूर्वक खेती की जा सकती है। मौसमी पुष्पों में गेलार्डिया एक महत्वपूर्ण पुष्प है। यह गर्मी, बरसात व सर्दी तीनों ही मौसम में आसानी से उगाया जा सकता है। फरवरी–मार्च में बुवाई करने पर फूल गर्मियों में, मई–जून में बुवाई करने पर बरसात में और सितम्बर–अक्टूबर में बुवाई करने पर सर्दियों में फूल आते हैं। गैलार्डिया में अधिक तापमान व लवणीय मृदाओं के प्रति सहनशीलता पायी जाती है। इसके पौधे कठोर, विभिन्न प्रकार की मिट्टीयों मे उगाया जा सकता है। विभिन्न जलवायुवीय परिस्थितियों में यह –1 डिग्री सेण्टीग्रेड तक न्यून तापमान सहन कर सकता है। यह काफी उच्च लवणतायी सहन कर सकता हैं और इसे खारी मिट्टी के लिए एक नई फूल फसल के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

प्रजातियां और किस्में :–

1. **गैलार्डिया पल्चेला** :

यह वार्षिक प्रकति का होता है। इसके फूल लाल, नारंगी, पीले, लाल रंग के साथ एकल या डबल होते हैं। गैलार्डिया पल्चेला किस्म लोरेन्जियाना, गैलार्डिया पल्चेला किस्म पिक्टा, इंडैन चीफ, लॉलीपोप पीला, लॉलीपोप औरेंज, सनशाइन स्ट्रेन, रेगलिस, संगुइनिया, पीला सन (उज्ज्वल पीला), रेड प्लुमे (जीवंत गहरा लाल), गेटी डबल मिक्स्ड, डबल टेट्रा फिस्टा (टेट्राप्लॉइड), सनशाइन मिक्स्ड और सन डांस बिकोलोर आदि उपयुक्त किस्में हैं।

2. **गैलार्डिया अरिस्टाटा** :– यह प्रजाति बारहमासी, भूमि और सूखे से प्रतिरोधी है।

3. **गैलार्डिया×ग्रांडीफ्लोरा** :

इस प्रजाति का विकास गैलार्डिया अरिस्टाटा और गैलार्डिया पल्चेला के संकरण से हुआ है। यह बारहमासी (टेट्राप्लॉइड) होता है। इसके पुष्प आकार में बड़े होते हैं। इसकी किस्में है : की गैटी मिक्स्ड, स्टोक्स रॉयल मोनार्च, समर किस्स, एरिजोना सन, समर फियर, रेड प्लुम, कोबोल्ड, सनसेट (नारंगी), यूरिया (सोना), गोल्ड कोबोल्ड, पीली रानी, बरगंडी (वाइन–रेड), गैलार्डिया किस्म ओरेंज और लेमन (सर्वाधिक उपज 33 टन/हेक्टेयर)

पौध प्रवर्धन के प्रकार एवं समय :

गैलार्डिया पल्चेला का प्रवर्धन बीज के माध्यम से और गैलार्डिया अरिस्टाटा का भू:स्तारी या झुण्ड से पौधे को अलग कर के भी किया जाता है। आजकल माइक्रोप्रोपैगेशन विधि के द्वारा कम समय में अधिक और रोगरहित पौधे तैयार कर सकते हैं। बीज सूखे हुए फूलों से एकत्रित करते हैं, सावधानी पूर्वक बीजों को फूल से अलग करने के लिए रेत के साथ रगड़ते हैं क्योंकि सूखे फूलों पर छोटे–छोटे कांटे होते हैं, जिसके कारण खाली हाथ से बीज निकालने से बीजों को अलग करते समय जलन हो जाती हैं। एक पौधे से 2–3 सकर्स तैयार कर सकते हैं, अगली पीढ़ी की फसल के लिए अच्छे आकार और गुणवत्ता वाले सकर्स का चयन करते हैं। गैलार्डिया की एक वर्ष में तीन फसलें ली जा सकती हैं। जैसे की गर्मी में फरवरी–मार्च, बरसात में मई–जून और सर्दियों में सितम्बर–अक्टूबर लेकिन, किसान मुख्य फसल के रूप में गर्मी और बरसात के मौसम वाली फसल लेना पसंद करते हैं।

गैलार्डिया की पौध के लिए नर्सरी तैयार करना :

नर्सरी में उठी हुई क्यारी बनाते हैं, जिनका आकार चौड़ाई में 1 मीटर, जमीन से उठी हुई 15 सेमी और लम्बाई में 3 मीटर रखते हैं। अच्छे जल निकास के लिए मिट्टी के साथ रेत मिलाते हैं। क्यारियों की खुदाई के पश्चात कुछ समय के लिए खुला छोड़ देते हैं जिससे की हानिकारक जीव मर जाते हैं। 5 किलोग्राम वर्मीकपोस्ट प्रति मीटर के हिसाब से क्यारियों मे मिलाते हैं। एक हेक्टेयर के लिए 500 से 600 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बीज बोने से पूर्व फफूंदनाशी दवा जैसे थाइरम या बाविस्टीन आदि से उपचारित कर के बोना चाहिए। बीज की बुआई पंक्तियों में 5 सेमी दूरी पर एवं 1 सेमी गहराई मे बोते है, और बीजों को रेत की पतली परत से ठक देते हैं और इसके बाद हल्की सिंचाई की जाती हैं, बीज अंकुरण के लिए आवश्यक तापमान 18–22 डिग्री सेन्टीग्रेड होता हैं। दिन मे दो बार सिंचाई करने पर बीज जल्दी अंकुरित हो जाते हैं। नर्सरी में पौधों को तब तक बनाए रखते हैं, जब तक उन्हें मुख्य क्षेत्र में रोपाई योग्य न हो जाए। अच्छे अंकुरण और सरल रोपाई के लिए इसके बीजों को प्रो–ट्रे में भी उगाया जा सकता हैं।

खेत की तैयारी :

खेत को 2–3 बार जुताई करें और पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेते हैं। अंतिम जुताई के समय 20 से 25 टन गोबर की खाद प्रति हेक्टयेर की दर से भूमि में डालनी चाहिए। सिंचाई की सुविधानुसार खेत में क्यारियां बना लेनी चाहिए।

पौध की रोपाई :

पौध की रोपाई मुख्य क्षेत्र में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 40 सेमी एवं पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी पर रोपते हैं। पौध को 45 दिनों के बाद नर्सरी से मुख्य क्षेत्र में रोपण किया जाता हैं। पौध एक समान दिखने वाले (10 सेमी ऊंचाई या 4 पत्ती) एवं अच्छी गुणवात्ता वाली पौध का चयन करना चाहिए। पौध रोपण सुबह या शाम के समय उपयुक्त रहता हैं और इसके तुरन्त बाद सिंचाई करनी चाहिए। मृत पौध को बदलने के लिए 7 दिनों के बाद रोपण करते हैं। गर्मी में 4–6 दिनों एवं सर्दी में 10–12 दिनों में सिंचाई करते हैं।

खाद एवं उर्वरक:

पौध रोपण से पूर्व अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 20–25 टन, औसतन नाइट्रोजन 175 किलोग्राम, फोस्फॉरस 100 किलोग्राम एवं पोटाश 60 किलोग्राम प्रति हेक्टयेर की दर से भूमि में डालते हैं। नाइट्रोजन की आधी मात्रा और फोस्फॉरस एवं पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा मुख्यतः खेत की अंतिम जुताई के साथ डालना चाहिए। शेष आधी मात्रा को दो बराबर भागो में बॉट कर 30 दिनों तथा 60 दिनों के अंतराल पर फसल में डालते हैं।

निराई–गुड़ाई :

इस फसल में दो तीन बार गुड़ाई कर खरपतवारों को नष्ट कर सकते हैं। गुड़ाई करते समय पौधौं का ध्यान रखना चाहिए।

फूलों की तुड़ाई एवं उपज :

गैलार्डिया के फूलों की नियमित तुड़ाई महत्वपूर्ण है। फूलों की तुड़ाई पूरी तरह से खुलने के बाद ही करते हैं। औसतन उपज लगभग 100 से 150 क्विंटल, सर्दी मे फूल उपज 19 टन और बीज उपज 7.9 क्विंटल प्रति हेक्टयेर, गर्मी मे फूल उपज 18 टन और बीज उपज 6.8 क्विंटल प्रति हेक्टयेर प्राप्त होती हैं।

गैलार्डिया की फसल से आमदनी :

इसकी खेती से कम लागत में अधिक लाभ कमाया जा सकता हैं। यह बाजार में औसतन 10 से 15 रुपये प्रति किलोग्राम तक बिकता है। इसकी खेती में कुल खर्च लगभग 50,000–60,000 हजार तक होता है और शुद्ध लाभ लगभग 2,50,000–3,00,000 लाख प्रति हेक्टयेर तक हो जाता है।

****